International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 10, pp 305-307, October 2025

उदीयमान शैक्षिक आवश्यकताओं के संदर्भ में ज्ञान मीमांसा का अध्ययन

अजय कुमार मौर्य [1], डॉ0 अशोक कुमार यादव [2]

[1]शोधकर्त्ता , [2]शोध निर्देशक सहायक आचार्य)
शोध केन्द्र I.I.M.T.University Meerut
डिपार्टमेंट एजूकेशन कॉलेज ऑफ एजूकेशनए आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय मेरठ
E-mail- ajaymaurya44037@gmail.com

सारांश :–

यह अध्ययन उदीयमान शैक्षिक आवश्यकताओं के संदर्भ में ज्ञान मीमांसा के सिद्धान्तो का विश्लेषण करता है। इसमें ज्ञान के स्रोत अधिग्रहण की पद्धतियों डिजिटल युग में शिक्षा के नए आयाम और मूल्य आधारित दृष्टिकोण पर चर्चा की गयी है। निष्कर्षतः ज्ञान मीमांसा बदलते वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा को प्रासंगिक, न्याय संगत और मानवीय बनाय रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी लिए इसे ज्ञानम् मनुजस्य तृतीयम नेत्रम भी कहा जाता है।

कुंजी शब्द :– ज्ञान मीमांसा, उदीयमान शैक्षिक आवश्यकताएँ, ज्ञान के स्रोत डिजिटल शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन, शिक्षा के समान अवसर, शिक्षा में प्रद्योगिकी।

1- प्रस्तावना :–

मानव सभ्यता के विकास में शिक्षा सदैव केंद्रीय भूमिका निभाती रही है। शिक्षा केवल जानकारी का संचरण नही बल्की ज्ञान विवेक और मूल्यो का समावेसित समान्वत विकास है। ज्ञान मीमांसा जिसे दार्शनिक भाषा में म्चपेजमउवसवहल कहा जाता है। ज्ञान की प्रकृति स्रोत सीमाएँ और सत्यापन की प्रकिृया का अध्ययन काती है। यह समझने का प्रयास करती है कि हम क्या जानते है। कैसे जानते है और उस ज्ञान की प्रमाणिकता को कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है। शती सदी में विज्ञान प्रौद्योगिकी सूचना विज्ञान और वैश्विकरण के तीन विकास में शिक्षा प्रनाली के अभूतपूर्व परिवर्तन किए है पारंपरिक पाठशाला से लेकर वर्चूअल कक्षाओं तक रटने की पद्धति से लेकर कौशल–आधारित और समस्या–समाधान उन्मुख शिक्षा तक हर स्तर पर नई मांगे और उपेक्षाए सामने आई है इन उदीयमान शैक्षिक आवश्यकताओं में डिजिटल साक्षरता आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मक अंतर सांस्कृतिक समझ और जीवन पर्यन्त सीखने की क्षमता प्रमुख है। इन परिस्थितियों में ज्ञान मीमांसा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योकि यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सत्य तर्क अनुभव और प्रमाण की उपयोगिता को बताती है। इसके माध्यम से हम यह निर्धारित कर सकते है कि बदलते युग में शिक्षा किस प्रकार प्रासंगिक सुलभ और नैतिक बनी रह सकती है।

2. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण :–

शोध कार्य की प्रमाणिकता और गहराई इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें पूर्ववर्ती शोध और उपलब्ध साहित्य का किस प्रकार अध्ययन और समावेश किया गया है। इस अध्ययन के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय श्रोतो का अवलोकन किया गया है। जिनमें दार्शनिक ग्रन्थ, शिक्षा संबंधी शोध–पत्र नितिगत दस्तावेज और तकनीकी रिपोर्ट शामिल है। ज्ञान मीमांस के सदर्भ में प्लेटो में ज्ञान वो सत्य औचित्यपूर्ण विश्वास के रूप में बताया है। उन्होने तर्क और विचार विमर्श के ज्ञान का प्रमुख आधार बताया है।

अरस्तू ने अनुभव और निरीक्षण का ज्ञान का मूल श्रोत बताया है भारतीय परंपरा में न्याय दर्शन और बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द का ज्ञान के प्रमुख साधन के रूप में बताया है। ज्ञान लॉक ने अनुभव वाद का बढ़ावा देते हुए कहा कि मानव मस्तिष्क जन्म के समय कोरी स्लेट है। जिसमें मनुष्य ज्ञान अंकित करता है।

(1.) उदीयमान शैक्षिक आवश्यकताओं पर साहित्य :–

i. Unesco (2015) Rethinking Education में 21वीं सदी के लिए शिक्षा के चार स्तंभ बताए गए है। सीखना जानने के लिए, करना सीखने के लिए, साथ जीना सीखना, होने के लिए सीखना।

ii. National Education Policy (2020) (भारत) ने आलोचनात्मक चिंतन रचनात्मक, डिजिटल साक्षरता, बहुभाषिकता को भविष्य की शिक्षा का आधार।

iii. O.E.C.D. (2019) dh Future of Education and skills.

(2.) ज्ञान मीमांसा की व्याख्या :–

ज्ञानम मनुजस्य तृतीयम नेत्रम अर्थात ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा जाता है। हमारे पास दो आखे है। इसके माध्यम से दुनिया का कोई भी वस्तु हो हम उसे देख सकते है और ज्ञान भौतिक और आध्यात्मिक दोनो सत्ता देखने में सहयोग करती है। ज्ञान मीमांसा दार्शनिक अध्ययन की शाखा है जो ज्ञान की प्रकृति स्रोत, सीमा और सत्यता विश्लेषण करती है। संस्कृत मे ज्ञान का अर्थ जानना या बोध और मीमांसा का अर्थ है। सूक्ष्म विचार या गहन जांच इस प्रकार ज्ञान मीमांसा का अर्थ है। ज्ञान के स्रोत अनुभव प्रत्यक्ष, तर्क, वितर्क, अनुमान, प्रभाव, साक्ष्य उपमान तुलना शब्द प्रमाणिक वचन आदि से समझा जाता है।

(3.) अध्ययन का उद्देश्य :–

i. ज्ञान की प्रकृति का विश्लेषण करना

ii. ज्ञान के स्रोतो की पहचान और मूल्यांकन करना

iii. उदीयमान शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ संबंध स्थापित करना

iv. जशिक्षय अधिग्रहण पद्धतियों की समीक्षा करना

v. मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व को रेखांकित करना

vi. भविष्य की चुनौतियों के समाधान सुझाना

(4.) अध्ययन का महत्व :–

i. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार

ii. आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा

iii. ज्ञान के स्रोतों की प्रमाणिकता

iv. शिक्षण पद्धतियों का विकास

v. समान अवसर और न्याय संगत शिक्षा

vi. भविष्य की चुनौतियों से निपटना

vii. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नैतिक उपयोग

viii. वैश्विक परिवर्तनशील परिस्थितियों में शिक्षा का उपयोग।

(5.) शिक्षा पद्धति :–

यह अध्ययन वर्णनात्मक ;Descriptive) और विश्लेषणात्मक ;Analytical) शोद्ध पद्धति पर आधारित है। उसमें ज्ञान मीमांसा के दार्शनिक सिद्धांतों का अध्ययन कर उन्हे वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। शोध की प्रकृति गुणात्मक अध्ययन विचारधाराओं सिद्धान्तों और शैक्षिक नीतियों का गुणात्मक विश्लेषण है।

(6.) शोध के प्रश्न :–

i. ज्ञान मीमांसा की दार्शनिक परिभाषा और उसके मूल सिद्धांत क्या है?

ii. आधुनिक समय में ज्ञान के प्रमुख स्रोत कौन–कौन से है और उनकी प्रमाणिक्ता कैसे सुनिश्चित की जा सकती है?

iii. उदीयमान शैक्षिक आवश्यकताओं में कौन–कौन से नए कौशल और दृष्टीकोण आवश्यक हो गए है?

iv. पारंपरिक शिक्षा पद्धतिया और आधुनिक डिजिटल शिक्षा पद्धतियों ज्ञान मीमांसा के दृष्टिकोण से कैसे भिन्न है?

v. ज्ञान मीमांसा का उपयोग शिक्षा में मूल्य आधारित शिक्षा दृष्टिकोण विकसित करने में किस प्रकार किया जा सकता है?

vi. 21वीं सदी की शिक्षा में सूचना की सत्यता डिजिटल विभाजन और सांस्कृतिक विविधता जैसी चुनौतियों से निपटने मे ज्ञान मीमांसा की क्या भूमिका हो सकती है?

(7.) वर्तमान समय में ज्ञान मीमांसा की उपयोगिता :–

i. आधुनिक युग में ज्ञान मीमांसा केवल सूचना संग्रहण तक सीमित नही है बल्की यह समाज अर्थव्यवस्था विज्ञान और संस्कृति के विकास का प्रमुख साधन बन चुका है। डिजिटल क्रांति वैश्विकरण और प्रौद्योगिकी के तेज विकास ने ज्ञान मीमांसा की प्रासंगिकता और उपयोगिता को कई गुना बढ़ा दिया है।

ii. व्यक्तिगत विकास मे आलोचनात्मक चिंतन समस्या समाधान क्षमता और रचनात्मकता का विकास करना निर्णय लेने में नैतिक मूल्यों के पालन–पोषण को सहायक है।

iii. समाजिक विकास में समाजिक न्याय समान अवसर और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देता है।

iv. आर्थिक विकास मे नवाचार उधमिता को प्रोत्साहन नयी तकनीक का विकास ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का निमाण करना

v. वैज्ञानिक तकनीक ज्ञान अनुसंधान और खोज का दिशा प्रदान करना।

vi. वैखिक परिप्रेक्ष्य में अन्तराष्ट्रीय समझौता अन्य साझेदारी का मजबूत करना जलवायु परिवर्तन महामारी उर्जा संकट, पानी संकट, समाधान के उपयोग करना।

निष्कर्ष :–

इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ज्ञान मीमांसा केवल दार्शनिक विमर्श तक सीमित नही है। बल्कि यह शिक्षा समाज और व्यक्तिगत जीवन के हर क्षेत्र में व्यावहारिक महत्व रखती है यह ज्ञान के माध्यम से सत्यता की खोज करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

i. UNESCO (2015) Rethinking Education] UNESCO Publishing

ii. OECD (2019) Future of Education and Skills 2030

iii. Siemens G. (2005) Connectivism: A Learning Theory for the Digital Age

iv. Anderson T., Dron J. (2021) Three Generations of Distance Education

v. शर्मा, वी.पी. (2010) शिक्षा दृष्टि, नई दिल्ली

vi. कुमार, एस.के. (2015) तालीमनामा, नई दिल्ली

vii. पांडे, एस.एन. (2013) शिक्षा का दर्शन, आगरा